गायत्री महायज्ञ विधान

कर्मकाण्ड भावार्थ एवं टिप्पणी

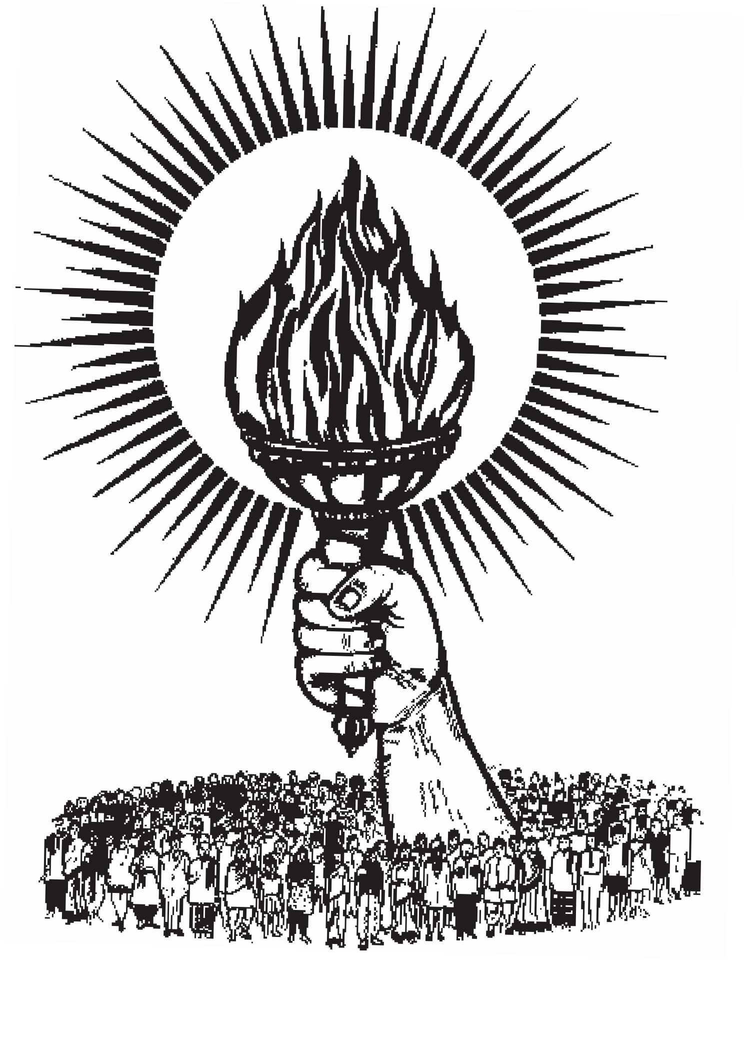

गायत्रीतीर्थ–शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
(उत्तराखण्ड)
पिन–२४९४११

यज्ञीय कर्मकाण्ड मन्त्रों के भावार्थ एवं टिप्पणी

॥ मङ्गलाचरणम् ॥

टिप्प्णी- प्रत्येक कुण्ड से एक-एक परिजन, हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर खड़े हो जायें। मन्त्रोच्चार के साथ सबके कल्याण की मङ्गल -कामना करते हुए सभी परिजनों के ऊपर अक्षत-पुष्प की वर्षा करें। भावना करें कि हमारे ऊपर दैवी-अनुग्रह बरस रहा है।

ॐ भद्रं कर्णेभिः . . . . . .देवहितं यदायुः ॥

भावार्थ- हे देवगण! हम कानों से कल्याणकारी बातें सुनें, आँखों से कल्याणकारी दृश्य देखें तथा दृढ़ शरीर से युक्त होकर तुम्हारी स्तुति करते हुए सम्पूर्ण आयु पर्यन्त देवहित के कार्यों (लोकहित के कार्यों) में संलग्न रहें।

॥ पवित्रीकरणम् ॥

टिप्पणी- सभी परिजन बायें हाथ की हथेली में जल लेकर दाहिने हाथ से ढकें, मन्त्र के पश्चात् अभिमन्त्रित जल को समस्त शरीर पर छिड़क लें, भावना करें कि हमारा शरीर, मन और अन्तःकरण पवित्र हो रहा है।

ॐ अपवित्रः पवित्रो. . . . . . . पुनातु ॥

भावार्थ- पवित्र अथवा अपवित्र किसी भी अवस्था में कोई क्यों न हो, जो पुण्डरीकाक्ष (कमलवत् निर्लिप्त नेत्रों वाले-भगवान् विष्णु) का स्मरण करता है, वह अन्तर्बाह्य (शरीर-मन) से पवित्र हो जाता है। हे परमात्मन्! हमें पवित्र करो, पुण्डरीकाक्ष हमें पवित्र करो, पुण्डरीकाक्ष हमें पवित्र करो।

॥ आचमनम् ॥

टिप्पणी- एक-एक आचमनी जल स्वाहा के साथ तीन बार मुख में डालें। भावना करें-हमारे तीनों शरीरों को दिव्य-पोषण प्राप्त हो रहा है।

ॐ अमृतो परस्तरणमसि. . . . . . श्रीः श्रयतां स्वाहा॥

भावार्थ- हे अमृत स्वरूप जल (देवता) तुम मेरे बिस्तर (आधार) हो। हे अमृत जल (देवता) तुम मेरे आच्छादन (उपकारक) हो। हे देव! मुझे सत्य, यश और श्री समृद्धि से सम्पन्न बनाओ।

टिप्पणी-एक-एक आचमनी जल स्वाहा के साथ तीन बार मुख में डालें। भावना करें हमारे तीनों शरीरों को दिव्य-पोषण प्राप्त हो रहा है।

॥ शिखा वन्दनम् ॥

टिप्पणी- मस्तिष्क सद्विचारों का केन्द्र है, इसमें सदैव देव भाव ही प्रवेश करने पायें। इसी भावना के साथ सभी परिजन बायें हाथ की हथेली में जल लें, दाहिने हाथ की अंगुलियों को गीला कर शिखा-मूल का स्पर्श करें।

ॐ चिद्रूपिणि. . . . . कुरुष्व मे॥

भावार्थ-हे चैतन्य स्वरूपे! महामाये! (ब्रह्म की परा शक्ति) दिव्य तेज से सम्पन्न देवि! मेरे शिखा-स्थान पर विराजमान होकर मुझे दिव्यतेज प्रदान कीजिए।

॥ प्राणायामः ॥

टिप्पणी- सभी परिजन कमर सीधी करके बैठें, दोनों हाथ गोद में रखें, नेत्र बन्द करें, मन्त्रोच्चार के साथ प्राणायाम की क्रिया सम्पन्न करें। लम्बी-गहरी श्वास लें, थोड़ी देर रोकें, फिर छोड़ें। भावना करें, हमारे भीतर शरीरबल, मनोबल और आत्मबल की वृद्धि हो रही है।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः . . . . . . ब्रह्म भूर्भुवः स्वः ॐ ॥

भावार्थ- ॐ अर्थात् परमात्मा भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, और सत्यम् इन सात लोकों में संव्याप्त है। उस वरण करने योग्य भर्ग स्वरूप (पाप नाशक) दिव्य सविता देवता का मैं ध्यान करता हूँ, जो हमें सद्बुद्धि देकर सत्कर्म में प्रेरित करें। ब्रह्म (परमात्मा) आपः

(जल) रूप, ज्योति (तेज) रूप, रस (आनन्द) रूप तथा अमृतरूप है, जो भूः भुवः आदि समस्त लोकों में विद्यमान है।

॥ न्यासः ॥

टिप्पणी-सभी परिजन बायें हाथ की हथेली में जल लेकर दाहिने हाथ की पाँचों अँगुलियों को गीलाकर मन्त्रोच्चार के साथ निर्दिष्ट अङ्गों को बायें से दायें स्पर्श करते चलें। भावना करें-ये सभी इन्द्रियाँ देव-कार्य के अनुकूल बन रही हैं।

ॐ वाङ्. . . . . . . तनूस्तन्वा मे सह सन्तु।

भावार्थ- हे परमात्मन्! मेरे मुख में वाणी (वाक् शक्ति) हो। मेरी नासिका में प्राण-तत्त्व हो। मेरी आँखों में चक्षु (दर्शन शक्ति) हो। मेरे कानों में श्रवण की शक्ति हो। मेरी भुजाओं में बल हो। मेरी जंघाओं में ओज हो। मेरे समस्त अङ्ग दोष रहित होकर शरीर एवं मन के साथ सहयोग करें।

॥ पृथ्वी पूजनम् ॥

टिप्पणी- हम जहाँ से अन्न, जल, वस्त्र और ज्ञान प्राप्त करते हैं, वह मातृभूमि हमारी सबसे बड़ी आराध्या है। श्रद्धापूर्वक एक आचमनी जल धरती-माता को समर्पित कर नमन-वन्दन करें।

ॐ पृथ्वि त्वया. . . . . कुरु चासनम् ॥

भावार्थ- हे पृथ्वि देवि! तुम भगवान् विष्णु के द्वारा धारण की गयी हो और तुमने सभी लोकों को धारण किया है। हे देवि! तुम मुझे धारण करो और मेरे आसन को पवित्र करो।

॥ सङ्कल्पः ॥

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः . . . . सङ्कल्पमहं करिष्ये ॥

विष्णु स्वरूप परमात्मा की आज्ञा से प्रवर्तित (प्रारम्भ) होने वाले आज श्री ब्रह्माजी के दिन से दूसरे परार्द्ध में, श्री श्वेतवाराहकल्प में, वैवस्वत मन्वन्तर में, भूलोक में, भरतखण्ड के आर्यावर्त (भारत) देश में,

मासों में मासोत्तम मास . . . . . में, ... पक्ष में, ... तिथि में, ... दिन में, ... गोत्र में उत्पन्न हुआ . . . . . . नाम वाला मैं, सत्प्रवृत्ति संवर्धन के लिए, दुष्प्रवृत्ति का उन्मूलन करने के लिए, लोक कल्याण और आत्म कल्याण के लिए, वातावरण को परिष्कृत करने के लिए और उज्ज्वल भविष्य की कामना-पूर्ति के लिए प्रबल पुरुषार्थ करूँगा और इस प्रयोजन के लिए कलश आदि आवाहित देवताओं के पूजनपूर्वक . . . . कर्म सम्पन्न करने के लिए मैं सङ्कल्प करता हूँ।

॥ यज्ञोपवीत धारणम् ॥

ॐ यज्ञोपवीतं परमं. . . . . बलमस्तु तेजः ॥

परम पवित्र यज्ञोपवीत को प्रजापति ने सहजता से (सबके लिए) सर्व प्रथम विनिर्मित किया है। यह (यज्ञोपवीत) आयुवर्धक, शुभ्र (श्रेष्ठ), यशस्वी, बलदायक और तेजस्विता देने वाला है।

॥ जीर्णोपवीत विसर्जनम् ॥

ॐ एतावद्दिन . . . . सूत्र यथासुखम् ॥

हे ब्रह्मसूत्र! (यज्ञोपवीत) इतने दिनों तक मैंने तुम्हें धारण किया, अब जीर्ण हो जाने से तुम्हारा परित्याग कर रहा हूँ, तुम सुखपूर्वक अभीष्ट स्थान को चले जाओ।

॥ चन्दन धारणम् ॥

टिप्पणी-सभी परिजन दाहिने हाथ की अनामिका उँगली में चन्दन या रोली लेकर सहकार एवं सम्मान के साथ एक दूसरे को तिलक करें।

ॐ चन्दनस्य महत्पुण्यं. . . . . तिष्ठति सर्वदा ॥

भावार्थ-चन्दन धारण करना महान् पुण्यदायक, पवित्रता वर्धक, पाप नाशक, आपत्ति निवारक और सर्वदा श्री-समृद्धि वर्धक है।

॥ रक्षासूत्रम् ॥

ॐ व्रतेन दीक्षामा. . . . . . सत्यमाप्यते ॥

भावार्थ- श्रेष्ठकार्यों के लिए व्रत धारण करने से दीक्षा (पात्रता) की प्राप्ति होती है। दक्षता से श्रद्धा उत्पन्न होती है और श्रद्धा से सत्य (परमात्मा) की प्राप्ति होती है।

॥ कलश पूजनम् ॥

टिप्पणी-पूजा-वेदी पर रखा हुआ कलश विश्व-ब्रह्माण्ड का प्रतीक है। इसमें सारी देव-शक्तियाँ समायी हुई हैं। मुख्य वेदी के पास बैठे एक परिजन कलश-पूजन करें, शेष सभी याजक भावनापूर्वक हाथ जोड़कर ध्यान करें।

ॐ तत्त्वायामि . . . . आयुः प्रमोषीः ॥

भावार्थ- वेद मन्त्रों द्वारा वन्दित हे वरुण देव! हविर्दान (यज्ञ) द्वारा यजमान की कामनापूर्ति के लिए मैं ब्राह्मण तुमसे याचना करता हूँ कि तुम इस स्थान में क्रोध रहित होकर मेरे अभिप्राय को जानो और हम सबकी आयु को क्षीण न करो। हम सब किसी प्रकार क्षीण न हों।

ॐ मनोजूतिर्जुषताम्. . . . . . मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ ॥

यज्ञ में प्रयुक्त आज्य (घृत) सर्वव्यापी सवितादेव की सेवा करे। बृहस्पति इस यज्ञ का विस्तार करें। वे इस यज्ञ को निर्विघ्न सम्पूर्ण करें। सभी देवता इस यज्ञ में तृप्त हों। इस प्रकार प्रार्थना किए जाने वाले सविता देवता यजमान के प्रति अनुकूल हों।

ॐ वरुणाय नमः . . . . . . ध्यायामि ॥

मैं कलश में स्थित सभी देवताओं को गन्ध (चन्दन) अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि समर्पित करता हूँ।

॥ कलश प्रार्थना ॥

ॐ कलशस्य मुखे. . . . . प्रसन्नो भव सर्वदा ॥

भावार्थ- कलश के मुख स्थान में विष्णु, कण्ठ स्थान में रुद्र, मूल

(पेंदी) स्थान में ब्रह्मा, मध्य स्थान में मातृकाएँ (षोडश मातृका), कुक्षि (गर्भ-पेट) स्थान में सभी सागर, सातों द्वीपवाली धरती, ऋक्, यजु, साम और अथर्ववेद तथा छहों अङ्ग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष) सभी कलश में विद्यमान हैं। यहीं (कलश के मध्य में) गायत्री, सावित्री, शान्ति, पुष्टिदायी शक्ति सर्वदा निवास करती हैं। हे कलश देव! तुममें सभी प्राणी और समग्र प्राण प्रतिष्ठित हैं। हे कलश देव! तुम्हीं शिव, विष्णु और प्रजापति ब्रह्मा हो। हे कलश देवता! आदित्य गण (१२ सूर्य), वसुगण (८ वसु), रुद्रगण (११ रुद्र), विश्वेदेव, समस्त पितृगण आदि तुममें निवास करते हैं- ये सभी कामनाओं की पूर्ति करने वाले हैं। हे समुद्र के जल से उत्पन्न कलश! तुम्हारी प्रसन्नता से यह यज्ञ सम्पन्न करना चाहता हूँ। हे देव! आप यहाँ उपस्थित रहें और सदा-सर्वदा हम सब पर प्रसन्न रहें।

॥ दीप पूजनम् ॥

टिप्पणी-कलश के साथ दीपक भी पूजा वेदी पर रखा जाता है। यह परमात्मा की चेतना का प्रतीक है। मुख्य वेदी के पास बैठे एक परिजन दीप-पूजन करें, शेष सभी सभी परिजन ज्योति रूप परम प्रकाश का ध्यान कर नमन-वन्दन करें।

ॐ अग्नि. . . . . स्वाहा॥

भावार्थ- अग्नि ही ज्योति (ब्रह्म) है, (ब्रह्म) ज्योति ही अग्नि है, उस अग्नि को आहुति (पूजन सामग्री) देता हूँ। सूर्य ही (ब्रह्म) ज्योति है, (ब्रह्म) ज्योति ही सूर्य है, उस सूर्य को आहुति (पूजन सामग्री) देता हूँ। अग्नि ही (ब्रह्म) वर्चस् है, (ब्रह्म) वर्चस् ही अग्नि है, उस अग्नि को आहुति (पूजन सामग्री) देता हूँ। सूर्य ही वर्चस (ब्रह्मतेज) है, वर्चस् (ब्रह्मतेज) ही सूर्य है, उस सूर्य को आहुति (पूजन सामग्री)

देता हूँ। (ब्रह्म) ज्योति ही सूर्य है, सूर्य ही (ब्रह्म) ज्योति है, उस (ब्रह्म) ज्योति को आहुति (पूजन सामग्री) देता हूँ।

॥ देवावाहनम् ॥

टिप्पणी-विराट् सत्ता की विभिन्न चेतन धाराओं देव शक्तियों का आवाहन करें। सर्वप्रथम गुरुसत्ता का आवाहन करें। गुरु व्यक्ति नहीं, शक्ति हैं। वे हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने में समर्थ हैं। मुख्य वेदी के पास बैठे परिजन गुरु -पूजन करें। शेष सभी परिजन भावनापूर्वक नमन-वन्दन करें।

ॐ गुरुर्ब्रह्मा . . . . श्रीगुरवे नमः ॥ १-२ ॥

भावार्थ- गुरु (अज्ञान को दूर करके ज्ञान देने वाला) ही ब्रह्मा है, गुरु ही विष्णु है, गुरु ही शिव है और गुरु ही परब्रह्म है, उन सद्गुरुदेव को नमस्कार है। सम्पूर्ण विश्वब्रह्माण्ड में जड़-चेतन में परिव्याप्त परमेश्वर का जिसने बोध कराया, उन सद्गुरुदेव को नमस्कार है।

अब वेदमाता, देवमाता, विश्वमाता सद्ज्ञान-सद्भाव की अधिष्ठात्री माँ गायत्री का आवाहन करें।

आयातु. . . . . स्तुते ॥ ३ ॥

हे वरदायिनि देवि! अक्षरे (सर्वसमर्थ), ब्रह्मविदिनि (मन्त्र प्रवक्ता), वेदमाता गायत्रि! ब्रह्म की उद्भाविका! आप यहाँ आयें, आपको नमस्कार है।

ॐ स्तुता मया . . . . . ब्रह्मलोकम् ॥

मेरे द्वारा स्तुत (प्रार्थित), द्विजों (संस्कारी जनों) को भी पवित्र करने वाली, हे वरदायिनि वेदमातः (गायत्रि)! सन्मार्ग पर प्रेरित करती हुई दीर्घायु, प्राण (साहस), प्रजा (सन्तान-सहयोगी), पशु (अन्यान्य प्राणियों का सहकार), कीर्ति, द्रविण (समृद्धि) ब्रह्मवर्चस् (ब्रह्मज्ञान एवं बल) प्रदान करके, आप (अपने) ब्रह्मलोक को प्रस्थान करें।

अभीप्सितार्थ. . . . गणाधिपतये नमः ॥ ४ ॥

जो अभीष्ट प्रयोजन की पूर्ति के लिए देवताओं-दैत्यों (दोनों के द्वारा) पूजे गये हैं और सम्पूर्ण विघ्नों को समाप्त कर देने वाले हैं, उन गणाधिपति (प्रथमादि गणों के स्वामी) को नमस्कार है।

सर्वमङ्गल. . . . .स्तुते ॥ ५ ॥

सभी का मङ्गल करने वाली, शिवे! (कल्याणकारी) सभी कार्यों को पूर्ण करने वाली, शरणदात्री, त्रिनेत्रधारिणी, गौरि, नारायणि (महादेवी) आपको नमस्कार है।

शुक्लाम्बरधरं. . . . . मङ्गलायतनो हरिः ॥ ६-७ ॥

शुक्ल (श्वेत) वस्त्र धारण करने वाले, दिव्य गुणों से युक्त, चन्द्र सदृश (आह्लादक) वर्ण वाले, चतुर्भुज, प्रसन्नमुख (भगवान् हरि) का सम्पूर्ण विघ्नों की परिसमाप्ति के लिए ध्यान करना चाहिए। सर्वदा, सभी कार्यों में उसका अमङ्गल नहीं होता, जिसके हृदय में मङ्गल स्वरूप भगवान् श्री हरि विराजमान होते हैं।

विनायकं. . . . . सिद्धये ॥ ८ ॥

शान्तिपूर्वक, समस्त कार्यों की पूर्णता के लिए सर्व प्रथम विनायक (गणेश), गुरु, सूर्यदेव, ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर और देवी सरस्वती को प्रणाम करता हूँ।

मङ्गलं . . . . . . हरिः ॥ ९ ॥

भगवान् विष्णु मङ्गलदायक हैं। गुरुड़ध्वज (गरुड़ाङ्कित ध्वजा वाले भगवान् विष्णु) मङ्गलकारी हैं। पुण्डरीकाक्ष (निलिप्त नेत्र वाले भगवान् विष्णु) मङ्गल स्वरूप हैं। हरि (पापों को हर लेने वाले भगवान् विष्णु) मङ्गल के भाण्डागार हैं।

त्वं वै. . . . . . . सर्वार्थसिद्धये ॥ १० ॥

आप निश्चित रूप से चतुर्मुख ब्रह्मा (सृष्टिकर्त्ता) सत्य लोक

(सत्यता पर दृढ़ रहने वाले), पितामह (सभी के पोषणकर्त्ता) हैं। मेरी सवार्थसिद्धि (सभी) के लिए अभीष्ट आप इस मण्डल (स्थान) में आकर विराजमान हों।

शान्ताकारं. . . . . . सर्वलोकैकनाथम् ॥ ११ ॥

शान्ताकार (शान्त प्रकृति वाले), भुजगशायी (शेषनाग पर शयन करने वाले), पद्मनाभ (नाभि में स्थित कमल वाले), सुरेश (देवों के स्वामी), विश्वाधार (संसार के आधारभूत), गगनसदृश (आकाशवत् परिव्याप्त रहने वाले), मेघ के समान वर्ण वाले, शुभाङ्ग (श्रेष्ठ अङ्गापवयव वाले), लक्ष्मीकान्त (लक्ष्मी के स्वामी), कमलनयन (कमलवत् नेत्र वाले), योगियों द्वारा ध्यान किये जाने वाले, संसार के भय को दूर करने वाले, सभी लोकों के एक मात्र स्वामी भगवान् विष्णु की (मैं) वन्दना करता हूँ।

वन्दे देवमुमा. . . . . . .शिवं शङ्करम् ॥ १२ ॥

उमापति, देवताओं के गुरु, देव (शिव) की वन्दना करता हूँ, जगत् के कारणभूत (भगवान् शङ्कर) की वन्दना करता हूँ, सर्पों के आभूषण वाले, मृग (चर्म) धारण करने वाले (शङ्कर) की वन्दना करता हूँ, पशुओं (प्राणियों) के स्वामी (महेश) की वन्दना करता हूँ, सूर्य, चन्द्र व अग्नि रूप नेत्र वाले (त्रिनेत्र) की वन्दना करता हूँ, भक्तजनों को आश्रय देने वाले (आशुतोष) की वन्दना करता हूँ तथा कल्याणकारी शुभदाता (अवगढ़दानी) की वन्दना करता हूँ।

ॐ त्र्यम्बकं. . . . . . .मृतात् ॥ १३ ॥

सुगन्धि (सद्गुण) और पुष्टिवर्धक (पोषण करने वाले) त्र्यम्बक (त्रिनेत्रशिव) को मैं आहुति प्रदान करता हूँ। (वे देव) मुझे अपने अमृत (गुणों) से उर्वारुक (पकने के बाद फल के द्वारा डण्ठल छोड़ देने) के समान मृत्यु के बन्धन से मुक्त करें।

दुर्गे स्मृता. . . . .. सदार्द्रचित्ता ॥ १४ ॥

हे देवि दुर्गे! (समस्त) प्राणियों के द्वारा स्मृत (पूजित) हुई तुम उनके समस्त भय को दूर कर देती हो। स्वस्थजनों के द्वारा याद किये जाने पर उन्हें सद्बुद्धि तथा अत्यधिक शुभ-कल्याण प्रदान करती हो। हे दारिद्र्य दुःख और भय दूर करने वाली देवि! सभी का उपकार करने के लिए सदैव सरस हृदय वाली तुम्हारे अतिरिक्त और कौन है? अर्थात् कोई नहीं।

शुक्लां . . . . बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥ १५ ॥

(जो) शुक्ल वर्ण वाली, ब्रह्म विचार (वेदों के ज्ञान) के सार स्वरूप अत्यधिक श्रेष्ठ, आद्यशक्ति, जगत् में (सर्वत्र) व्याप्त रहने वाली, वीणा और पुस्तक धारण करने वाली, अभयदान देने वाली, अज्ञानान्धकार को दूर करने वाली, हाथ में स्फटिक (मोती) की माला धारण करने वाली, (श्वेत) कमल के आसन पर विराजमान, सद्बुद्धि प्रदान करने वाली हैं, उन परमेश्वरी (सर्व समर्थ) भगवती (ऐश्वर्यशालिनी) देवि सरस्वती को नमस्कार है।

आर्द्रां. . . . . म आवहे ॥ १६ ॥

सरस हृदय वाली, हाथी पर सवारी करने वाली, पोषण प्रदान करने वाली, सुवर्ण (सुन्दर वर्ण) वाली, सोने की माला धारण करने वाली, सूर्य शक्ति स्वरूपा अर्थात् सूर्य की पत्नी (संज्ञा) स्वरूपा, स्वर्णमयी (समृद्धिशाली) अग्नि की शक्ति स्वरूपा देवि लक्ष्मी! मैं तुम्हारा आवाहन करता हूँ।

कालिकां. . . . . . पूजयाम्यहम् ॥ १७ ॥

मैं सदा कलाओं से परे, कल्याणकारी हृदय वाली शिवास्वरूपा, कल्याणों की जन्मदात्री, कल्याणमयी देवी कालिका (काली) की पूजा करता हूँ।

विष्णु पादाब्ज. . . . . . जाह्नवि ॥ १८ ॥

भगवान् विष्णु के चरण कमल से निःस्रत, त्रिपथगा (आकाश, भू, पाताल में गमन करने वाली) धर्मद्रव (सजल धर्म) के नाम से विख्यात, हे जाह्नवि! (राजा जह्नु की उरु से निष्पन्न गङ्गे! मेरे पापों को हरण करो।)

पुष्करादीनि. . . . . . . सदा मम ॥ १९ ॥

पुष्कर आदि तीर्थ तथा गङ्गा आदि नदियाँ मेरे पूजा के समय, पवित्र करने के लिए सदैव यहाँ उपस्थित रहें।

ब्रह्मामुरारिः. . . . . . . शान्तिकरा भवन्तु ॥ २० ॥

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सूर्य, चन्द्र, भूमिसुत (मङ्गल), बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, और केतु सभी ग्रह शान्तिदायक हों।

गौरी पद्मा. . . . . . . षोडश ॥ २१-२२ ॥

गौरी, पद्मा, शची,मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, माताएँ, लोक-माताएँ, धृति, पुष्टि, तुष्टि तथा अपनी कुल देवी-ये सोलह पूजनीया मातृकाएँ गणेश से भी अधिक वृद्धि प्रदान करने वाली हैं।

कीर्तिर्लक्ष्मी. . . . . . . दिव्यमातरः ॥ २३ ॥

कीर्ति, लक्ष्मी, धृति, मेधा, सिद्धि, प्रज्ञा और सरस्वती ये सातों दिव्य माताएँ सभी माङ्गलिक कृत्यों में पूजनीय होती हैं।

नागपृष्ठ. . . . . . . नमाम्यहम् ॥ २४ ॥

हाथी की पीठ पर आसीन, हाथ में शूल धारण किये हुए, महान बलशाली, पाताल के नायक (स्वामी) वास्तुदेव को मैं नमस्कार करता हूँ।

क्षेत्रपालान्. . . . . . . पूजयाराधितान् मया ॥ २५ ॥

इस यज्ञ की सिद्धि (सफलता) के लिए मेरी पूजा (सम्मान)

से आराधित (आवाहित-प्रार्थित) हुए सभी अरिष्टों (विघातकों) को दूर करने वाले क्षेत्रपालों को (मैं) नमस्कार करता हूँ।

॥ सर्वदेव नमस्कारः ॥

टिप्पणी- नमस्कार का उद्देश्य देव-शक्तियों का सम्मान, उनके प्रति श्रद्धा को व्यक्त करना है। हमारे मन का, रुचि का झुकाव देवत्व की ओर हो, इस भाव के साथ सभी परिजन हाथ जोड़कर मस्तक झुकाकर देव-शक्तियों को नमस्कार करें।

भावार्थ-सिद्धि और बुद्धि के सहित श्रीगणेश जी को नमस्कार है।

लक्ष्मी और नारायण को नमस्कार है।

उमा और महेश्वर को नमस्कार है।

वाणी और हिरण्यगर्भ (ब्रह्माजी) को नमस्कार है।

शची इन्द्राणी और इन्द्र को नमस्कार है।

माता-पिता के चरण कमलों को नमस्कार है।

कुल (वंश) के देवताओं को नमस्कार है।

इष्ट (इच्छित) फलप्रदाता देवताओं को नमस्कार है।

ग्राम (समूह) के देवताओं को नमस्कार है।

स्थानीय देवताओं को नमस्कार है।

वास्तु (वस्तुओं के अधिष्ठाता) देवताओं को नमस्कार है।

सम्पूर्ण देवों को नमस्कार है।

सभी ब्राह्मणों (ब्रह्म परायणों) को नमस्कार है।

सभी तीर्थों (तार देने वालों) को नमस्कार है।

इस (देव यजन) कार्य की प्रधान देवी श्री गायत्री माता को नमस्कार है।

उपर्युक्त पुण्याहवाचन पुण्य एवं दीर्घायु प्रदान करें।

॥ षोडशोपचार पूजनम् ॥

टिप्पणी- भगवान् को पदार्थों की भूख नहीं होती, पदार्थों को समर्पित कर जो श्रद्धा-भावना व्यक्त की जाती है, देवता उसी से सन्तुष्ट होते हैं। प्रत्येक कुण्ड से एक-एक परिजन पूजन करें, शेष सभी अपनी भावनाएँ समर्पित करें।

भावार्थ-सभी देवताओं को नमस्कार है। सभी का आवाहन एवं स्थापन करता हूँ।
आसन प्रदान करता हूँ।
पाद्य (पैर धोने का जल) प्रदान करता हूँ।
अर्घ्य (सम्मानार्थ जल) प्रदान करता हूँ।
आचमन (कुल्ला करने आदि के निमित्त जल) प्रदान करता हूँ।
स्नान हेतु जल प्रदान करता हूँ।
वस्त्र समर्पित करता हूँ।
यज्ञोपवीत प्रदान करता हूँ।
गन्ध (चन्दन या रोली) लगाता हूँ।
पुष्पों को समर्पित करता हूँ।
धूप सुवासित करता हूँ।
दीपक दिखाता हूँ।
नैवेद्य (खाद्य पदार्थ) का भोग लगाता हूँ।
अक्षत प्रदान करता हूँ।
ताम्बूल (पान) तथा पूगीफल (सुपाड़ी) समर्पित करता हूँ।
दक्षिणा प्रदान करता हूँ।
सभी के अभाव में अक्षत समर्पित करता हूँ।
तत्पश्चात् (देवशक्तियों को) नमस्कार करता हूँ।

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधार हेतवे।

साष्टांगोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः॥

हे भगवान्! मैं प्रयत्न-पूर्वक आपको साष्टाङ्ग प्रणाम करता हूँ। सभी का हित करने वाले तथा जगत् के आधार भूत आपको नमस्कार है।

नमोस्त्वनन्ताय. . . . . . . युगधारिणे नमः॥

हे अनन्त रूपों वाले! सहस्रों आकृतियों वाले, सहस्रों पैरों, नेत्रों, सिरों, जंघाओं एवं भुजाओं वाले! सहस्रों नामों वाले तथा सहस्रों-करोड़ों युगों को धारण (पोषण) करने वाले शाश्वत पुरुष! आपको बार-बार नमस्कार है।

॥ स्वस्तिवाचनम् ॥

टिप्पणी- स्वस्ति अर्थात् कल्याणकारी, हितकारी। वाचन अर्थात् वचन बोलना। सबके कल्याण की कामना करते हुए सभी परिजन दायें हाथ में अक्षत-पुष्प लें, बायाँ हाथ नीचे, दायाँ हाथ ऊपर रखें, मन्त्र पूरा होने पर पूजन-सामग्री एक तश्तरी में एकत्रित कर लें।

ॐ गणानां त्वा . . . . . जासि गर्भधम्॥

भावार्थ- हे परमात्मन्! तुम्हीं गणों के स्वामी गणपति हो, तुम्हीं प्रिय कर्त्ताओं के स्वामी प्रियपति हो, तुम्हीं निधियों के स्वामी निधिपति हो, हम तुम्हारा आवाहन करते हैं। तुम श्रेष्ठ निवास देने वाले रक्षक सिद्ध होओ, तुम सब पदार्थों के रचयिता होते हुए सब प्रकार से अभिमुख होते हो (सर्वदा सभी के समक्ष उपस्थित रहते हो)।

ॐ स्वस्ति न. . . . . . बृहस्पतिर्दधातु॥

अत्यन्त यशस्वी इन्द्र हमारा कल्याण करें, सर्वज्ञ पूषा हमारा कल्याण करें, अरिष्ट विनायक गरुड़ हमारा कल्याण करें और सुरगुरु बृहस्पति हमारा कल्याण करें।

ॐ पयः . . . . .सन्तु मह्यम् ॥

हे परमात्मन्! तुम इस पृथ्वी में रस (सरसता-आनन्द) का सञ्चार करो, औषधि-वनस्पतियों में रस का सञ्चार करो तथा द्युलोक व अन्तरिक्ष में रस का सञ्चार करो। मेरे लिए सम्पूर्ण दिशाएँ रस प्रदान करने वाली हों।

ॐ विष्णो रराटमसि. . . . . . विष्णवे त्वा ॥

यह जड़ चेतन जगत् विष्णु (परमात्मा) के प्रकाश से प्रकाशित है, इस (विष्णु) से परिव्याप्त है। सम्पूर्ण जगत् यज्ञ का साधन है। हे विष्णु (परमात्मन्)! हम सब यज्ञानुष्ठान के लिए आपका आश्रय लेते हैं।

ॐ अग्निर्देवता. . . . . . . वरुणो देवता ॥

अग्नि देवता हैं, वायु देवता हैं, सूर्य देवता हैं, चन्द्रमा देवता हैं, वसुगण देवता हैं, रुद्रगण देवता हैं, आदित्यगण देवता हैं, मरुद्गण देवता हैं, विश्वेदेवागण देवता हैं, बृहस्पति और देवेन्द्र देवता हैं तथा वरुणदेव देवता हैं। (इन सभी देवों का चिन्तन-मनन करता हुआ मैं अग्नि-स्थापना के निमित्त इष्टिका (ईंटें) स्थापित करता हूँ)।

ॐ द्यौः शान्ति. . . . . . शान्तिरेधि ॥

द्युलोक शान्तिदायक हो, अन्तरिक्ष शान्तिदायक हो, पृथ्वी शान्तिदायक हो, जल शान्तिदायक हो, औषधियाँ शान्तिदायक हों, वनस्पतियाँ शान्तिदायक हों, विश्वेदेवा शान्तिदायक हों, ब्रह्म (परमात्मा) शान्तिदायक हों, सब कुछ शान्तिदायक हों, चारों ओर शान्ति हो शान्ति हो। ये सभी (देवगण) मुझे शान्ति प्रदान करें।

ॐ विश्वानि देव . . . . नन्न आसुव ॥

हे सविता देवता! मेरे सम्पूर्ण दुरितों (पापों) को दूर करो और हमारे लिए जो भी कल्याणकारी हो, उसे प्रदान करो।

ॐ शान्ति. . . . . .सुशान्तिर्भवतु॥

आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त हो। सम्पूर्ण अरिष्ट पूर्णरूपेण शान्त हों।

॥ रक्षाविधानम् ॥

टिप्पणी - जहाँ उत्कृष्ट बनने, शुभ कार्य करने की आवश्यकता है, वहाँ यह भी आवश्यक है, कि दुष्टों की दुष्प्रवृत्ति से सतर्क रहा जाये, इसलिये रक्षा-विधान किया जाता है। प्रत्येक कुण्ड से एक-एक याजक हाथ में अक्षत लेकर खड़े हो जायें, जिस दिशा की रक्षा का मन्त्र बोला जाये, उसी ओर अक्षत की वृष्टि करें।

ॐ पूर्वे रक्षतु. . . . . .यज्ञकर्मसमारभे॥

भावार्थ- पूर्व दिशा में वाराह भगवान् रक्षा करें, आग्नेय में गुरुड़ध्वज (विष्णु) रक्षा करें, दक्षिण में पद्मनाभ (शेषशायी विष्णु) रक्षा करें, नैर्ऋत्य में मधुसूदन रक्षा करें, पश्चिम में गोविन्द रक्षा करें, वायव्य में जनार्दन रक्षा करें, उत्तर में श्रीपति रक्षा करें, ईशान में महेश्वर रक्षा करें, ऊपर में धाता (धारण तथा रक्षा करने वाले विष्णु) रक्षा करें, नीचे अनन्त भगवान् रक्षा करें, इसके अतिरिक्त अन्य जिन स्थानों का कथन नहीं हुआ, उन सब स्थानों की परमेश्वर रक्षा करें। भगवान् शिव की आज्ञा से वे सभी भूत-प्रेतगण दूर हट जाएँ जो इस यज्ञस्थल की भूमि पर विद्यमान हैं और विघ्न डाला करते हैं। सभी भूत-प्रेत पिशाचगण यहाँ से सभी दिशाओं को भाग जाएँ। इस प्रकार के अविरोध पूर्वक (बिना किसी के बैर-विरोध से) मैं इस यज्ञीय कृत्य को प्रारम्भ करता हूँ।

॥ अग्निस्थापनम् ॥

टिप्पणी-अग्नि को ब्रह्म का प्रतिनिधि मानकर यज्ञ-कुण्ड में उनकी प्रतिष्ठा करते हैं। अग्नि के दिव्य गुण हम सबमें आयें, इसी भावना

के साथ प्रत्येक कुण्ड से एक-एक परिजन मन्त्र के साथ अग्निदेव का आवाहन कर गन्ध, अक्षत, पुष्प एवं मिष्टान्न आदि से पूजन करें। शेष सभी परिजन श्रद्धापूर्वक नमन करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः ....

भावार्थ- हे अग्ने! तुम भूः (पृथिवी), भुवः (अन्तरिक्ष), स्वः (स्वर्ग) तथा द्युलोक, सर्वत्र विद्यमान हो। हे पृथिवि! तुम देवताओं के यज्ञ के योग्य हो। तुम्हारे पृष्ठ प्रदेश पर अन्न (वैभव) सिद्धि के लिए, अन्नभक्षक गार्हपत्यादि अग्नि की स्थापना करता हूँ। देवताओं के अग्रदूत (पुरोहित) स्वरूप अग्नि-देव को प्रतिष्ठित करता हूँ, हविष्यवहन करने वाले अग्निदेव से निवेदन करता हूँ कि हे अग्ने! हमारे इस यज्ञ में देवताओं को लाकर प्रतिष्ठित करो। अग्निदेव को नमस्कार है। मैं अग्निदेव का आवाहन, स्थापन, पूजन और ध्यान करता हूँ।

॥ गायत्री स्तवनम् ॥

टिप्पणी-सविता हमारे जीवन देवता हैं। हम सब में प्राणों का सञ्चार करने वाले, वरण करने योग्य सविता देवता की स्तुति-भावना पूर्वक साथ-साथ करें।

ॐ यन्मण्डलं. . . . . . . तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १ ॥

भावार्थ-जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल, प्रकाश उत्पन्न करने वाला, विशाल रत्नों की तीव्र प्रभा वाला, अनादि-रूप वाला तथा दरिद्रता और दुःखविनाश का कारण है, वह मुझे पवित्र करे।

ॐ यन्मण्डलं . . . . तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ २ ॥

जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल, देवगणों से भली-भाँति पूजित है, ब्राह्मणों (विद्वानों) के द्वारा मानव-मुक्तिदाता के रूप में स्तुत है, उस देवों के भर्ग (तेज) को मैं प्रणाम करता हूँ, वह मुझे पवित्र करे।

ॐ यन्मण्डलं. . . . . . . तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ३ ॥

जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल, ज्ञान का घनीभूत रूप है, अगम्य (अगाध) है, तीनों लोकों में पूजित है, त्रिगुण (सत्, रज, तम) रूप है तथा समस्त दिव्य तेजों में समन्वित है, वह मुझे पवित्र करे।

ॐ यन्मण्डलं . . . . तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ४ ॥

जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल, गूढ़मति (अज्ञान से आच्छादित बुद्धि) का प्रकाशक है, लोगों के अन्तस् में धर्मतत्त्व की वृद्धि करने वाला है तथा जो समस्त पापों के क्षय (नाश) का कारण हैं, वह मुझे पवित्र करे।

ॐ यन्मण्डलं . . . . तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ५ ॥

जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल, व्याधियों (शारीरिक कष्टों) को विनष्ट करने में दक्ष है, ऋक्, यजुस् और सामवेद के द्वारा प्रशंसित है तथा जिससे भूः, भुवः और स्वः लोक प्रकाशित हैं, वह मुझे पवित्र करे।

ॐ यन्मण्डलं . . . . तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ६ ॥

जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल, वेदज्ञों द्वारा व्याख्यायित है, जो सिद्ध-चारणों द्वारा गाया (प्रशंसित किया) जाता है, जो योगीजनों और योगस्थ जनों द्वारा प्रशंसित है, वह मुझे पवित्र करे।

ॐ यन्मण्डलं. . . . . . . तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ७ ॥

जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल, सभी लोगों द्वारा पूजित है, इस मर्त्यलोक में ज्योति स्वरूप है तथा जो देश-काल से परे अनादि रूप वाला है, वह मुझे पवित्र करे।

ॐ यन्मण्डलं . . . . तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ८ ॥

जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल, ब्रह्मा-विष्णु के मुखमण्डल सदृश है, जो अक्षर (नष्ट न होने वाला) तथा लोगों के पापों को दूर करने वाला है, जो काल और कल्प के क्षय का कारण भी है, वह मुझे पवित्र करे।

ॐ यन्मण्डलं . . . . तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ९ ॥

जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल, सृजन के लिए प्रसिद्ध है, सृष्टि की उत्पत्ति, रक्षा और संहार कार्य में सक्षम है, जिसमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड प्रलयकाल में समाहित-लीन हो जाते हैं, वह मुझे पवित्र करे।

ॐ यन्मण्डलं . . . . तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १० ॥

जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल, सर्वगत-सर्वत्र संव्याप्त विष्णु की आत्मा है, सर्वशुद्ध परमधाम है, जो योगमार्ग द्वारा सूक्ष्म अन्तःकरण से ज्ञात होने वाला है, वह मुझे पवित्र करे।

ॐ यन्मण्डलं . . . . तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ ११ ॥

जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल, ब्रह्मज्ञानियों द्वारा प्रशंसित है, जिसका चारण और सिद्ध-समुदायों द्वारा गुणगान किया जाता है तथा वेदज्ञजन जिस मण्डल को नित्य स्मरण करते हैं, वह मुझे पवित्र करे।

ॐ यन्मण्डलं . . . . तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १२ ॥

जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल, वेदज्ञानियों द्वारा गेय है तथा योगियों द्वारा योगमार्ग से प्राप्तव्य है, उस सर्वज्ञ दिव्य तत्त्व को हम प्रणाम करते हैं, वह मुझे पवित्र करे।

॥ अग्नि प्रदीपनम् ॥

टिप्पणी-जलती हुई अग्नि में ही आहुति दी जाती है। इसकी एक

ही प्रेरणा है कि हम चाहे थोड़े ही दिन जियें, लेकिन हमारा जीवन प्रकाश युक्त हो। इसी भाव के साथ प्रत्येक कुण्ड से एक-एक परिजन पंखे से हवा करके समिधाओं में सुलगती हुई अग्नि को ज्वलित करें।

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने. . . . . यजमानश्च सीदत।

भावार्थ- हे अग्ने! प्रबुद्ध एवं जाग्रत् होओ। यजमान के लिए इष्टा-पूर्त का सृजन करो-यज्ञ में प्रत्यक्षतया प्रतिष्ठित हों। हे विश्वेदेवा! यह यजमान देवताओं के साथ चिरकाल तक स्वर्ग में सुखपूर्वक निवास करे।

॥ समिधाधानम् ॥

टिप्पणी -शरीरबल, मनोबल, आत्मबल और ब्रह्मबल के प्रतीक रूप में चार समिधायें यज्ञ भगवान् को समर्पित की जाती हैं। प्रत्येक कुण्ड से एक-एक परिजन समिधाओं के दोनों सिरों को घी में डुबोकर प्रत्येक मन्त्र के स्वाहा उच्चारण के साथ यज्ञ भगवान् को समर्पित करें।

ॐ अयन्त इध्म. . . . . ॥ १ ॥

हे अग्नि देव! यजमान द्वारा आहुत समिधा से वृद्धि प्राप्त करो। इस यजमान को सबको-प्रजा (सन्तान) पशु व ब्रह्मवर्चस से सम्पन्न बनाओ। हमें किसी प्रकार की हानि न हो, जिससे हम सदैव आपका यजन कर सकें। यह आहुति जातवेदस् (अग्नि) के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ॐ समिधा. . . . . ॥ २ ॥

हे ऋत्विजो! समिधा द्वारा अग्नि का यजन करो, इन अतिथि स्वरूप अग्निदेव को घृत प्रदान कर प्रज्वलित करो। साथ ही अनेक हव्य पदार्थों द्वारा यज्ञ करते हुए इन्हें प्रदीप्त करो। यह आहुति जातवेदस् (अग्नि) के लिए है, मेरे लिए नहीं है।

ॐ सुसमि. . . . . ॥ ३ ॥

हे ऋत्विजो! भली प्रकार प्रदीप्त जातवेदा के लिए अत्यन्त सुस्वादु शुद्ध घृत प्रदान करो। यह आहुति जातवेदस् (अग्नि) के लिए है, मेरे लिए नहीं है।

ॐ तं त्वा. . . . . ॥ ४ ॥

हे अग्ने! हम तुम्हें समिधाओं और घृत की आहुतियों से प्रदीप्त करते हैं, आप सदैव वृद्धि को प्राप्त होते रहें। यह आहुति जातवेदस् (अग्नि) के लिए है, मेरे लिए नहीं है।

॥ जल प्रसेचनम् ॥

टिप्पणी -प्रत्येक कुण्ड से एक-एक परिजन, प्रोक्षणी पात्र में जल लेकर खड़े हो जायें। मन्त्र के साथ वेदी के बाहर चारों दिशाओं में जल का घेरा लगायें, भावना करें कि अग्नि के चारों ओर शीतलता का घेरा बना रहे हैं। जिसका परिणाम शान्तिदायक होगा।

ॐ अदिते. . . . . वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।

भावार्थ- हे परमात्मन्! अदिति की दिशा (पूर्व) में रक्षा करो, अनुमत (पश्चिम) दिशा में रक्षा करो, सरस्वती-दिशा (उत्तर) में रक्षा करो। हे सविता देवता! यजमान की सौभाग्य वृद्धि के लिए आप उसे यज्ञानुष्ठान करने को प्रेरित कीजिए। द्युलोक (स्वर्ग) में विराजमान केतपू गन्धर्व हमारी वाणी को पवित्र करें। वाणी के अधिष्ठाता देवता हमारी प्रार्थना सुनें।

॥ आज्याहुतिः ॥

टिप्पणी- सर्वप्रथम सात मन्त्रों से सात आहुतियाँ केवल घृत की दी जाती हैं। प्रत्येक कुण्ड से एक-एक परिजन स्रुवा पात्र को घी में डुबोकर स्वाहा के साथ घृत की आहुतियाँ यज्ञ भगवान् को समर्पित करें। स्रुवा पात्र लौटाते समय जल से भरे प्रणीता पात्र में बचे हुए घृत की एक-एक बूँद टपकाते चलें।

१. ॐ . . . . इदं न मम।

यह आहुति प्रजापति (प्रजापालक) के लिए है, मेरे लिए नहीं है।

२. ॐ . . . . इदं न मम।

यह आहुति इन्द्र (श्रेष्ठता) के लिए है, मेरे लिए नहीं है।

३. ॐ . . . . इदं न मम।

यह आहुति अग्नि (तेजस्विता) के लिए है, मेरे लिए नहीं है।

४. ॐ . . . . इदं न मम।

यह आहुति सोम (आह्लादकता) के लिए है, मेरे लिए नहीं है।

५. ॐ . . . . इदं न मम।

यह आहुति भूः (पृथ्वी) के लिए है, मेरे लिए नहीं है।

६. ॐ . . . . इदं न मम।

यह आहुति भुवः (अन्तरिक्ष) के लिए है, मेरे लिए नहीं है।

७. ॐ . . . . इदं न मम।

यह आहुति स्वः (स्वर्ग) के लिए है, मेरे लिए नहीं है।

॥ गायत्री मन्त्राहुतिः ॥

टिप्पणी- सभी याजक कमर सीधी करके बैठें। मध्यमा, अनामिका और अँगुष्ठ के सहारे हवन-सामग्री लेकर 'तेरा तुझको अर्पण' का भाव रखते हुए, स्वाहा के साथ यज्ञ भगवान् को अपनी आहुतियाँ समर्पित करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः . . . . . . प्रचोदयात्। इदं गायत्र्यै इदं न मम।

उस प्राण स्वरूप, दुःखनाशक, सुख स्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पाप नाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अन्तरात्मा में धारण करें वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करें। यह आहुति उसी गायत्री तत्त्व को समर्पित है, मेरे लिए नहीं।

॥ अनिष्ट निवारणार्थं अभीष्ट संवर्द्धनार्थं आहुतिः ॥

टिप्पणी- ये आहुतियाँ परिवर्तनकारी महाकाल को समर्पित हैं। उनकी प्रेरणा से जागृत आत्माओं में साहस का संचार हो। सदाचरण के शुभ संस्कार सबमें जागृत हों तथा भ्रष्टाचार की कुप्रवृत्ति का समूल नाश हो। इसी भावना के साथ शिव-गायत्री मंत्र से आहुतियाँ समर्पित करें।

ॐ पंचवक्त्राय विद्महे, महादेवाय धीमहि।

तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् स्वाहा। इदं रुद्राय इदं न मम्।

॥ सूर्य गायत्री-मंत्राहुतिः ॥

टिप्पणी- सविता देवता के विधेयात्मक लाभ सभी को प्राप्त हों, इसी भाव के साथ सूर्य गायत्री मंत्र से आहुतियाँ समर्पित करें।

ॐ भास्कराय विद्महे, दिवाकराय धीमहि।

तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् स्वाहा। इदं सूर्याय इदं न मम्।।

॥ महामृत्युञ्जय-मन्त्राहुतिः ॥

टिप्पणी- आज ....का जन्मदिन है। इनके स्वास्थ्य लाभ/मङ्गलमय जीवन तथा दीर्घायुष्य की कामना करते हुए **(साथ ही)** आज ...... का विवाह दिन है, इनके सुखी दाम्पत्य-जीवन एवं मङ्गलमय भविष्य की कामना करते हुए **(साथ ही)** विशाल देव-परिवार से जुड़े सभी परिजनों के आध्यात्मिक उन्नति एवं निरोग जीवन की कामना करते हुए विशेष आहुतियाँ यज्ञ भगवान् को समर्पित करें।

॥ स्विष्टकृत्होमः ॥

टिप्पणी- यह प्रायश्चित्त आहुति भी कहलाती है। आहुतियों में जो कुछ भूल रह गयी हो, उसकी पूर्ति के लिए नैवेद्य समिर्पत किया जाता है। प्रत्येक कुण्ड से एक-एक याजक स्रुचि-पात्र में मिष्टान्न और घृत भरकर अपने स्थान पर बैठे-बैठे ही मन्त्र के पश्चात् यज्ञ भगवान् को आहुति समर्पित करें।

ॐ यदस्य कर्मणो. . . . . . स्विष्टकृते इदं न मम।

भावार्थ- हे अग्निदेव! इस यज्ञ कार्य में जो भी किसी विधान का उल्लंघन हुआ हो, जो कुछ भी न्यूनता रह गयी हो, उसे इस स्विष्टकृत् आहुति भली प्रकार होम रहा हूँ। सम्पूर्ण दोषों के प्रायश्चित्त स्वरूप समर्पित की गई यह आहुति हमारी सम्पूर्ण कामनाओं की पूर्ति करने वाली हो, क्योंकि आप कामनाओं की पूर्ति करने में समर्थ है। यह आहुति अग्निदेव के लिए है, मेरे लिए नहीं।

॥ पूर्णाहुतिः ॥

टिप्पणी- मनुष्य की गरिमा इस बात में है, कि वह जो श्रेष्ठ सङ्कल्प करे, उसे पूरा करे, अधूरा न छोड़े। इसी भावना के साथ प्रत्येक कुण्ड से एक-एक परिजन स्रुचि-पात्र में सुपारी और थोड़ी हवन सामग्री लेकर खड़े हो जायें, स्वाहा के साथ यज्ञ भगवान् को अपनी पूर्णाहुति समर्पित करें।

ॐ पूर्णमदः . . . . ॐ सर्वं वै पूर्ण ग्वं स्वाहा।

भावार्थ- वह (ब्रह्म) पूर्ण है, यह (संसार) पूर्ण है। उस पूर्ण ब्रह्म से निष्पन्न होने के कारण इस संसार को भी पूर्ण कहा जाता है। पूर्णतत्त्व में से पूर्णता ले ली जाय, तो भी वह पूर्ण ही रहता है। हे यज्ञ में प्रयुक्त पात्रो! तुम हविष्यान्न से पूर्ण होकर यज्ञपति इन्द्र के पास जाओ। पुनः फल सहित मेरे पास लौट आओ। हे सैकड़ों (अश्वमेध यज्ञ) कर्म करने वाले इन्द्र! हमारे मध्य परस्पर क्रय-विक्रय जैसा व्यवहार सम्पन्न हो अर्थात् हमें यज्ञ का फल मिलता रहे।

॥ वसोर्धारा ॥

टिप्पणी-कार्य के आरम्भ में जितनी लगन और उत्साह हो, अन्त में उससे भी अधिक बना रहे। स्नेह की धार कभी टूटने न पाये, इसी भावना के साथ प्रत्येक कुण्ड से एक-एक परिजन स्रुचि पात्र

में घृत भर लें, धीरे-धीरे धार बनाते हुए यज्ञ भगवान् को घृत की आहुति समर्पित करें।

ॐ वसोः पवित्रमसि. . . . . कामधुक्षः स्वाहा।

भावार्थ- जो यज्ञ असंख्य संसार को धारण करने वाला और पवित्र करने वाला है, जो (यज्ञ) अनेक ब्रह्माण्डों को धारण करने वाला और पवित्र करने वाला है, उस यज्ञ को सविता देवता पवित्र करें। हे परमात्मन्! शुद्धि के कारणभूत व अनेक विद्याओं के धारणकर्त्ता वेद तथा अच्छी प्रकार पवित्र करने वाले यज्ञ से हम लोगों को पवित्र कीजिए।

॥ नीराजनम् आरती॥

टिप्पणी- आरती उतारने का तात्पर्य है कि यज्ञ-भगवान् का सम्मान, परमार्थ-परायणता का ज्ञान-प्रकाश दसों-दिशाओं में फैले, सर्वत्र उसी का शंख बजे, घण्टा-निनाद सुनाई पड़े और हर धर्म प्रेमी इस प्रयोजन के लिए उठ खड़ा हो। इसी भावना के साथ प्रत्येक कुण्ड से एक-एक परिजन आरती प्रज्वलित करें, तीन बार जल घुमाकर यज्ञ भगवान् और देव-प्रतिमाओं की आरती उतारें, पुनः तीन बार जल घुमाकर सभी तक आरती पहुँचा दें।

ॐ यं ब्रह्मवेदान्तविदो. . . . . विघ्नविनाशनाय॥

भावार्थ- जिसे वेदान्ती 'परब्रह्म' कहते हैं तथा अन्य लोगों (सांख्यवादियों, नैयायिकों, मीमांसकों आदि) द्वारा सृष्टि की उत्पत्ति के जिस परम कारण को 'प्रधान', 'पुरुष' अथवा 'ईश्वर' कहा गया है, उस (अनेक नाम वाले 'एक') विघ्न-विनाशक परमात्मा को नमस्कार है।

ॐ यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र. . . . . देवाय तस्मै नमः॥

जिस (परमात्मा) की ब्रह्मा, वरुण, इन्द्र, रुद्र, मरुदादिगण दिव्य स्तोत्रों से स्तुति करते हैं। सामगान करने वाले अङ्ग, पद,

क्रम और उपनिषदों के साथ वेदमन्त्रों से जिसका स्तवन करते हैं, जिसको योगीजन ध्यानावस्था में, तन्मय होकर मन से देखा करते हैं, देवता व असुर भी जिसके अन्त को नही जान पाते, उन देव (परमात्मा) को नमस्कार है।

॥ घृतावघ्राणम् ॥

टिप्पणी- प्रणीता पात्र में टपकाया हुआ घृत सभी याजक दाहिने हाथ की अंगुलियों के अग्रभाग में ले लें। दोनों हथेलियों पर मलकर,यज्ञ कुण्ड की ओर इस तरह रखें मानो उन्हें तपाया जा रहा हो। गायत्री मन्त्र बोलते हुए सूँघें और कमर के ऊपरी भाग तथा मुखमण्डल पर लगायें। भावना करें यज्ञीय ऊर्जा को हम आत्मसात् कर रहे हैं।

ॐ तनूपा. . . . . मे पाहि।

भावार्थ- हे अग्निदेव! तुम शरीर रक्षक हो, मेरे शरीर को सदैव नीरोग रखो।

ॐ आयुर्दा. . . . . देहि।

हे अग्ने! तुम आयुष्कारक हो, मुझे दीर्घायु बनाओ।

ॐ वर्चोदा. . . . . . मे देहि।

हे अग्ने! तुम वर्चस्वदायी हो, हमें वर्चस्वी बनाओ।

ॐ अग्ने यन्मे. . . . . आपृण।

हे अग्ने! मेरी सभी कमियों की पूर्ति कर दो।

ॐ मेधां मे . . . . . . आदधातु।

सविता देवता मुझे मेधा (बुद्धि) सम्पन्न बनायें।

ॐ मेधां मे. . . . . आदधातु।

देवी सरस्वती मुझे मेधावान् बनायें।

ॐ मेधां मे. . . . . . . पुष्करस्रजौ।

पुष्कर (नीलकमल) की माला धारण किए हुए अश्विनी कुमार मुझे सदैव मेधाशक्ति से युक्त रखें।

॥ भस्मधारणम् ॥

टिप्पणी- -जीवन का अन्त भस्म की ढेरी के रूप में होता है। हम मन, वचन, कर्म से ऐसे विवेक-युक्त कार्य करें, जो जीवन को सार्थक बनाने वाले सिद्ध हों। इसी भावना के साथ स्फ्य पात्र से भस्म निकाल कर सभी परिजन दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में ले लें। मन्त्र के साथ निर्दिष्ट अङ्गों पर क्रमशः लगाते चलें।

ॐ त्र्यायुषं दमदग्ने. . . . . . . इति हृदि।

भावार्थ- जमदग्नि और कश्यप आदि ऋषियों तथा देवताओं की तीनों (बाल, युवा, वृद्ध) अवस्थाओं-चरित्रों का सारभूत अंश (दीर्घायु जीवन व उज्ज्वल चरित्र) हमें प्राप्त हो।

॥ क्षमा प्रार्थना ॥

टिप्पणी- यज्ञ कार्य के विधि-विधान में कोई त्रुटि रह गयी हो, दूसरों से कुछ अनुचित व्यवहार बन पड़ा हो, उसके लिए सभी याजक हाथ जोड़ कर यज्ञ भगवान् से क्षमा-प्रार्थना करें।

ॐ आवाहनं न . . . . . सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

भावार्थ- हे परमेश्वर! मैं न आवाहन जानता हूँ, न पूजन और न ही विसर्जन। अतः आप मुझे (इस अज्ञानता के लिए) क्षमा करें॥ १॥ हे सुरेश्वर ! मैं मन्त्र, क्रिया और भक्ति से हीन हूँ। हे देव! जैसा भी कुछ पूजन कृत्य कर सका, वह मेरे लिए पूर्णता प्राप्त करें अर्थात् मुझे अपना अभीष्ट प्राप्त हो॥ २॥ हे देव! हे परमेश्वर! (आप मुझ पर) प्रसन्न हों। (मन्त्र बोलने में) जो भी अक्षर, पद व मात्राओं की त्रुटि हुई हो, उन सभी को क्षमा कर दें॥ ३॥ तप, यज्ञ आदि

क्रियाओं में जिनकी स्मृति और स्तुति मात्र से सम्पूर्ण न्यूनताएँ शीघ्र दूर हो जाती हैं, उन अच्युत (अक्षीणता दोष से रहित, विष्णु) को मैं नमन करता हूँ॥ ४ ॥ प्रमादवश इस यज्ञ में जो कुछ विधि-विधान का उल्लंघन हो जाता है, वह सब भगवान् विष्णु के स्मरण करने से सम्पूर्णता को प्राप्त हो जाता है- ऐसा श्रुति कहती है ॥ ५ ॥

॥ साष्टाङ्गनमस्कारः ॥

टिप्पणी- कण-कण में व्याप्त परमात्म सत्ता को हाथ जोड़, मस्तक झुका कर श्रद्धापूर्वक नमन-वन्दन करें।

ॐ नमो. . . . . . युगधारिणे नमः ॥

भावार्थ- हे अनन्त रूपों वाले! सहस्रों आकृतियों वाले, सहस्रों पैरों, नेत्रों, सिरों, जंघाओं एवं भुजाओं वाले! सहस्रों नामों वाले तथा सहस्रों-करोड़ों युगों को धारण (पोषण) करने वाले शाश्वत पुरुष! आपको बार-बार नमस्कार है।

॥ शुभकामना ॥

टिप्पणी- प्राणि-मात्र के कल्याण की कामना करते हुए सभी परिजन अञ्जलि फैला कर यज्ञ भगवान् से शुभकामना करें।

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां. . . . . . . देहि में हव्यवाहन ॥ १-३ ॥

भावार्थ- प्रजाजनों का कल्याण हो। शासक न्यायपूर्वक धरती पर शासन करें। गो-ब्राह्मणों (सौम्य जनों) को नित्य-प्रति शुभ की प्राप्ति हो। समस्त लोक (प्राणी) सुखी हों ॥ १ ॥

सभी सुखी हों, सभी नीरोग हों, सभी का कल्याण हो, कोई भी दुःख का भागी न बने ॥ २ ॥

हे हव्यवाहन (अग्निदेव)! मुझे श्रद्धा, मेधा, यश, प्रज्ञा, विद्या, पुष्टि, श्री (वैभव), बल, तेजस्विता, दीर्घायु एवं आरोग्य प्रदान करो।

॥ पुष्पाञ्जलिः ॥

टिप्पणी- सभी परिजन अपने हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर विदाई सत्कार के रूप में पूजा वेदी पर भावभरी पुष्पाञ्जलि अर्पित करते हुए यज्ञशाला के बाहर यज्ञ महिमा का गान करते हुए यज्ञशाला की परिक्रमा करें। यज्ञ रूप प्रभो हमारे भाव उज्ज्वल .... ॥

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त. . . . . . सन्ति देवाः ॥ ॐ मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥

देवताओं ने पूर्वकाल में यज्ञ द्वारा (श्रेष्ठकार्यों द्वारा) यज्ञ का यजन किया। इससे वे महामहिमाशाली स्वर्ग-लोक को प्राप्त हुए, जहाँ पहले से ही सिद्ध-महापुरुष व देवता निवास करते थे। ऐसे यज्ञ पुरुष को मन्त्र पुष्पयुक्त अञ्जलि समर्पित करता हूँ।

॥ शान्ति-अभिषिञ्चनम् ॥

टिप्पणी- दैहिक, दैविक व भौतिक तापों से सभी को मुक्ति मिले, सर्वत्र शान्ति ही शान्ति व्याप्त हो, इसी भावना के साथ मुख्य पूजा वेदी पर रखे हुए कलश के जल से एक प्रतिनिधि मन्त्र अभिषिञ्चन की क्रिया सम्पन्न करें। शेष सभी परिजन शान्ति-सुख का अनुभव करें।

ॐ द्यौ. . . . . . . सर्वारिष्ट सुशान्तिर्भवतु ॥

देखें- स्वस्तिवाचन

॥ सूर्यार्घ्यदानम् ॥

टिप्पणी- एक परिजन अभिषिञ्चन से बचा जल सूर्य देवता को समर्पित करें। शेष सभी याजक सूर्य देवता की ओर मुख करके खड़े हो जायें। भावना करें सविता देवता की तेजस्विता-प्रखरता हमारे रोम-रोम में समा रही है।

ॐ सूर्यदेव. . . . . भास्कराय नमः ॥

भावार्थ- हे सहस्त्र किरणों वाले तेजपुञ्ज, जगत् के स्वामी, दिवाकर, सूर्यदेव! मेरे ऊपर कृपा करो और भक्तिपूर्वक समर्पित इस अर्घ्यजल को स्वीकार करो।

ज्ञान का 'प्रकाश करने वाले', कश्यप और 'अदिति के पुत्र', 'भगवान् सूर्य' को नमस्कार है।

॥ प्रदक्षिणा ॥

टिप्पणी- अच्छे मार्ग पर सतत चलते रहने का सङ्कल्प लेते हुए यज्ञ भगवान् को केन्द्र मानकर अपने ही स्थान पर दायें से बायें एक परिक्रमा करें।

ॐ यानि कानि. . . . . . प्रदक्षिण पदे पदे ॥

भावार्थ- जो कुछ भी ज्ञात-अज्ञात पापकर्म हो गये हैं, वे सभी प्रदक्षिणा के एक-एक पद (कदम) से नष्ट हो जाते हैं।

॥ विसर्जनम् ॥

टिप्पणी- एक परिजन हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर आवाहित देव-शक्तियों को भावभरी विदाई देते हुए पूजा-वेदी पर अक्षत-पुष्प की वर्षा करें। सभी प्रार्थना करें कि ऐसा ही देव-अनुग्रह बार-बार मिलता रहे।

ॐ गच्छ त्वं. . . . . पुनरागमनाय च ॥

भावार्थ- हे अग्ने! हे भगवन्! कुण्ड स्थान से अपने निवास स्थान पर पधारें, मेरे ऊपर प्रसन्न हों और आहुतियाँ देवताओं तक शीघ्र पहुँचाएँ। हे देवश्रेष्ठ! परमेश्वर! जहाँ ब्रह्मा आदि देवता निवास कर रहे हैं, हे हुताशन! आप वहाँ पधारें। मेरे इस पूज्य भाव को लेकर हे देवगणों! पधारो, परन्तु अभीष्ट पूर्ति के लिए पुनः आने की मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ।

(यज्ञ महिमा गान समाप्त होने पर)

टिप्पणी-अब सभी परिजन अपने स्थान पर खड़े हो जायें। यहाँ से युग निर्माण सत्सङ्कल्प के प्रत्येक सूत्रों को बोला जा रहा है, आप सभी दुहराते चलें।

॥ जयघोष ॥

१. वेद माता गायत्री की- जय २. यज्ञ भगवान् की- जय

३. वेदभगवान् की जय- जय ४. परमपूज्य गुरुदेव की- जय

५. वन्दनीया माताजी की- जय ६. भारत माता की- जय

(अन्य जयघोष भी समयानुसार बोले जा सकते हैं।)

❀❀❀❀❀

पञ्चतत्त्व पूजनम्

पृथ्वी

ॐ मही द्यौ. . . . . भरीमभिः ॥ ध्यायामि।

भावार्थ- महान् स्वर्गलोक और विस्तीर्ण पृथ्वी हमारे इस यज्ञानुष्ठान को अपने-अपने कर्मों द्वारा पूर्ण करें और कृपा पूर्वक जलवृष्टि करते हुए सुवर्ण, पशु, रत्न आदि जो भी धन उपयोगी हैं, उन्हें अपने-अपने कर्मों द्वारा ही पूर्ण करें।

पृथ्वीमाता को नमस्कार है। मैं आपका आवाहन, स्थापन, पूजन और ध्यान करता हूँ।

अग्नि

ॐ त्वं नो अग्ने. . . . . . . प्रमुमुग्ध्यस्मत् ॥ . . . . . ध्यायामि।

भावार्थ- हे अग्ने! तुम सर्वज्ञाता, यज्ञादि कर्मों के प्रदाता, हवि-वाहक और कान्तिमान् हो। तुम हमसे वरुण देवता के क्रोध को दूर करो तथा हमसे दुर्भाग्य आदि दोषों को दूर कर दो।

अग्निदेव को नमस्कार है। मैं आपका आवाहन, स्थापन, पूजन और ध्यान करता हूँ।

वायु

ॐ आ नो नियु. . . . . सदा नः ॥ . . . . ध्यायामि।

भावार्थ- हे वायो! आप सैकड़ों और हजारों वाहनों द्वारा हमारे यज्ञ में आगमन करो इस तृतीय हवन में तृप्ति की अनुभूति करो। तुम अपने श्रेष्ठ कल्याण-साधनों द्वारा हमारी रक्षा करो।

वायुदेव को नमस्कार है। मैं आपका आवाहन, स्थापन, पूजन और ध्यान करता हूँ।

आकाश

ॐ या वां . . . . योनिर्माध्वीभ्यां त्वा ॥ . . . ध्यायामि ।

भावार्थ- हे अश्विद्वय! तुम्हारी जो वाणी प्रकाश करने वाली, प्रशंसा से ओत-प्रोत, प्रिय, सत्य से भरी हुई है, तुम अपनी उसी वाणी के द्वारा इस यज्ञ को सिञ्चित करो। हे पञ्चमग्रह! तुम अश्विनीकुमारों की प्रसन्नता के लिए इस उपयाम पात्र में ग्रहण किये गये हो। हे अश्विद्वय! यह तुम्हारा उत्पत्ति स्थान है। मधुर वाणी युक्त मन्त्र पढ़नेवाले अश्विद्वय के निमित्त मैं तुम्हें स्थापित करता हूँ।

आकाश देव को नमस्कार है। मैं आपका आवाहन, स्थापन, पूजन और ध्यान करता हूँ।

व्रतधारणम्

ॐ अग्ने व्रतपते. . . . . . सत्यमुपैमि ॥ ५ ॥

भावार्थ- हे व्रतपति अग्निदेव! मैं (अमुक) व्रत को धारण करूँगा। अतः प्रेरणा, मार्गदर्शन एवं संरक्षण के लिए मैं आपसे उस व्रत के विषय में निवेदन कर रहा हूँ, जिससे आपके अनुग्रह से मैं उसको पूर्ण कर सकूँ तथा उस व्रत से अपनी आत्मशक्ति की वृद्धि करके मैं (यजमान) असत्य को त्याग कर सत्य रूपी परमात्मा का आश्रय प्राप्त करूँ ॥ १ ॥

(मन्त्र २ से ५ में वायु, सूर्य, चन्द्रमा तथा व्रतपति इन्द्र से भी यही प्रार्थना की गई है।)

आशीर्वचनानि

विवेकसंयुतां. . . . . . वेदमाता प्रयच्छतु ॥ १ ॥

भावार्थ- वेदमाता गायत्री आपको सर्वदा विवेक (गुण-दोष को जानने की शक्ति) से युक्त प्रज्ञा (सद्बुद्धि), दूरदृष्टि तथा आदर्श चारित्र्य (सदाचार) प्रदान करें।

ब्रह्मवर्चसमास्तिक्यं. . . . . . . देवमाता ददातु ते ॥ २ ॥

भावार्थ- देवमाता गायत्री आपको ब्रह्मतेज, आस्तिकता, आत्म निर्भरता से युक्त मोद (प्रसन्नता), सज्ञनता एवं आत्मविश्वास दें।

भविष्योज्ज्वल. . . . . . . यक्षतु वैष्णवी ॥ ३ ॥

भावार्थ- माता वैष्णवी (पालनकर्ती) आपके हृदय में उज्वल भविष्य की आकांक्षा, ईश्वर में विश्वास तथा उच्चादर्शों के प्रति श्रद्धा-भावना भर दें।

श्रेष्ठ कर्त्तव्य. . . . . . . विश्वमाता प्रयच्छतु ॥ ४ ॥

विश्वमाता गायत्री आपको श्रेष्ठ कर्त्तव्य-निष्ठा, प्रतिभा, मानसिक हर्ष तथा उदारता से युक्त आत्मीयता प्रदान करें।

शालीनतां . . . . देयात्तुभ्यं सरस्वती ॥ ५ ॥

सरस्वती माता आपको सौन्दर्य, स्नेह तथा सज्ञनता मिश्रित शालीनता (विनम्रता), अविचल धैर्य तथा सन्तोष आदि गुण प्रदान करें।

स्वास्थ्यं मन्यु. . . . . . महाकाली प्रवर्धताम् ॥ ६ ॥

महाकाली आपके स्वास्थ्य, मन्यु (स्वाभिमान), आलस्यहीनता, उत्साहयुक्त पराक्रम तथा शौर्यपूर्ण साहस की वृद्धि करें।

वैभवं ममतां. . . . . . . महालक्ष्मी प्रयच्छतु ॥ ७ ॥

महालक्ष्मी जी आपको वैभव के साथ-साथ व्यापक मैत्रीभाव, ममता, पवित्रता, समता आदि गुण अवश्य प्रदान करें।

स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु. . . . . . . हरिभक्तिरस्तु ॥ ८ ॥

आपका कल्याण हो। आप सकुशल रहें तथा चिरञ्जीवी हों। आप उत्साह, शौर्य, धन, धान्य आदि से समृद्ध, ऐश्वर्यवान् और बलवान् हों। आपके सभी शत्रुओं का नाश हो। आपके वंश में भगवान् की भक्ति सदैव विद्यमान रहे।

ॐ अग्ने नय सुपथा राये. . . . . . . ते नम उक्तिं विधेम॥

भावार्थ- सब भागों के जानने वाले हे अग्निदेव! जिस रीति से हमें (अपने) ध्येय की (निश्चित) प्राप्ति हो, उस रीति से तुम हमें अच्छे रास्ते ले चलो। हमारे कुटिल पापों के साथ लड़ो (और उन्हें मिटा दो)। हम तुम्हें बार-बार नमस्कार करते हैं।

नत्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्॥

भावार्थ- मैं अपने लिए न तो राज्य चाहता हूँ, न स्वर्ग की इच्छा करता हूँ। मोक्ष भी मैं नहीं चाहता। मैं तो यही चाहता हूँ कि दुख से तपे हुए प्राणियों की पीड़ा का नाश हो।

नमस्ते सते ते जगत्कारणाय नमस्ते चिते सर्व लोकाश्रयाय।
नमोऽद्वैत तत्वाय मुक्तिप्रदाय नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय॥

भावार्थ- जगत् के कारणरूप, सत् स्वरूप हे परमेश्वर! आपको नमस्कार है। सारे विश्व के आधाररूप हे चैतन्य! आपको नमस्कार है। मुक्ति प्रदान करने वाले हे अद्वैत तत्त्व! आपको नमस्कार है। हे शाश्वत और सर्वव्यापी ब्रह्म! आपको नमस्कार है।

✪✪✪✪✪